P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-2* May- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

कबीर का चरखा–गांधी का चरखा की विरासत झांकती है।

रामाश्रय सिंह
वरिष्ठ स0 प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी

सारांश

कबीर का चरखा उस दुनिया के भीतरी और बाहरी पर्तों की चीड़–फाड़ करता है। जिसको कबीर ने अपनी कविता में अमर कर दिया है–स्थूल जगत के भीतर छिपा है सूक्ष्म जगत का सच! जिन्दगी का ताना–बाना। सच में हमारा समाज किस तरह बाबाओं के सामने घुटनों पर बैठा हुआ है। जबकि मेरे शोध लेख से धर्म और अध्यात्म को गंदा धंधा बना देने वाले फर्जी बाबाओं के दिन अब लद जायेगें। यहीं सचेत होने की जरूरत भी है कि कहीं नयी फौज उनकी जगह लेने को तैयार तो नहीं खड़ी है? क्योंकि जब कोई लड़की बुर्जुग को प्रणाम करती है तो दिल दहल जाता है कि कहीं बुजुर्ग के रूप में बाबा आशाराम तो नहीं हैं? इसलिए कबीर और गांधी का चरखा ही सच्चा काबा व बाबा रहेगा। है भी।

मुख्य शब्द : उदारवादी, भरमार, सुन्दर, नवोन्मेषी, पुनरूत्थानवादी, निर्वेर, आनन्दानुभूति, ललकार, अपरिग्रह, स्वालम्बन, समतामूलक, आध्यात्मिक, अनहद, औजार, त्रिवेणी, धर्म का बारूद, हथियार, ढोंगी, प्रपंची, मूल्यबोध, मोक्ष, विरासत, चंडाल, निःशेष, ठिकाना, थरथराती, स्वालम्बन, चूल्हा, चक्की, चरखा।

प्रस्तावना

कहना न होगा गांधी जी की राजनीति यदि लोकनीति की ओर हमेशा झुकी रही तो उसकी एक बड़ी वजह हैं कबीर भक्ति साहित्य के आदर्शो का उनके जीवन में समावेश था। शब्द और कर्म की एकता, अपरिग्रह, त्याग, सत्य, सादगी, लोक–लाभ, लाभ रहित जीवन का जो उनका आदर्श था। चरखा के जरिए उन्होंने गुलाम भारत को स्वालम्बन और श्रम की शिक्षा दी, तो रामचरित मानस से रामराज्य की अवधारणा। जिसके मूल में समतामूलक समाज–रचना का उनका सपना। कबीर के लिए चरखा सिर्फ रोजी, रोटी, कमाई का जरिया नहीं था। बल्कि त्याग, बलिदान, सच्चाई, सादगी और सेवा का आध्यात्मिक आधार भी था। इसे साधक ही सुनते हैं, वह साधक और कोई नहीं बल्कि गांधी थे। यह बात कहने और लिखने में कोई गुरेज नहीं है। मोहन दास करम चंद गांधी को यदि भक्ति साहित्य का संस्कार नहीं मिला होता, वे महात्मा गांधी नहीं हुए होते। क्या होते यह विचारणीय प्रश्न है आज भी? मेरा मानना है यहीं से इनके नाम में महात्मा जुड़ा है। बहस कुछ भी हो सकती है। होना भी चाहिए। जो निचोड़ है वह है चरखा।

जाहिर है कवयित्री एवलिन अंडर हिलने ''पोयम्स ऑफ कबीर (रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद) की भूमिका में लिखा है कि– कबीर अध्यात्म और उद्योग का मेल कराते हैं और एक नई संस्कृति को जन्म देते हैं। गांधी जी जब चरखा कातते हैं तो सिर्फ उसे स्वालम्बन के औजार के रूप में नहीं देखते, वे उससे निकलती संगीत को भी सुनते हैं। उनके एक–एक धागे में उन्हें कबीर की तरह ईश्वर दिखाई देते हैं। 1926 मे यंग इण्डिया में लिखते हैं– चरखे का संगीत सूत है। मैं जितनी बार चरखे से सूत निकालता हूँ उतनी ही बार भारत के गरीबों को विचार करता हूँ ''उद्योग और अध्यात्म'' का मेल करने वाले कबीर ने श्रमशील और गृहस्थ में सन्यास की नींव रखी थी। आधुनिक युग में गांधी जी ने इस महत्व को समझा। उनके जीवन पर कबीर का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि श्रम, संयास, गृहस्थ की त्रिवेणी बनी। इनके जीवन से कोई भी अदना आदमी समझकर अपने जीवन में उतार सकता है। गरीबी क्या चीज है? गरीब होना उतनी लज्जा की बात नहीं है, बल्कि इस दुनियाँ में सबसे बड़ी गरीबी अवांक्षित, अप्रिय, और उपेक्षित होना है। गांधी जी ने यहाँ तक कहा है कि– कुछ लोग दुनियाँ में इतने भूखे हैं, कि उनके लिए रोटी के सिवाय ईश्वर

का कोई रूप हो ही नहीं सकता।
जनतंत्र के लिए उससे बड़ा कलंक

क्या हो सकता है? इससे बड़ा सच यह है ऐसा मेरा मानना है—जमाखोर और मुनाफा

चोरों का भरोसा विज्ञान और भगवान दोनों पर है। बहस होगी? यही कारण है कि आम जन आज के समय में भक्त कवियों को भूले नहीं हैं। समाज में उनकी वाणी आज भी जिन्दा है, अमर है। कभी मर नहीं सकती जैसा कि—रामचरित मानस को मुकेश ने गाया। सुखबिंदर ने कबीर की वाणी को आवाज दी। तमिल कवि गोविन्द राजन ने रामचरित मानस का तमिल में अनुवाद किया। इकबाल ने लिखा—आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना। वो बाग की बहारें जो ओ सबका चहचहाना। सचमुच भक्ति आन्दोलन में एक तरफ सांस्कृति समन्वय पर जोर था तो दूसरी तरफ किसानों की दुर्दशा भी सामने लाई जा रही थी। तुकाराम की पंक्ति है—अकाल से सूखा द्रव्य गया मान। मलूकदास लिखते हैं— भूखहिं टूक, प्यासेहिं पानी। एहि भगति राम मन माहि। कृषक को लेकर कबीर दास, तुलसी दास दोनों चिंतित हैं यही नहीं यह परम्परा सरहपा से चलकर कबीर और उनसे आगे न जाने कहॉ तक चली जाती है। भक्त कवियों की भक्ति चेतना का मूल स्वर है—जाति न पूछे साधु की पूछ लीजिए ज्ञान, एवं जाति—पॉति पूछै न कोई। हरि को भजे सो हरि का होई। आज इसकी जरूरत कोई नहीं समझता। आज हरि का स्थान राज सत्ता ने ले लिया है। तमाम ढोंगी, अज्ञानी, प्रपंची धर्मोपदेशक बन गये हैं जैसे—रामपाल, राधेमॉं, हनीप्रीत, और राम रहीम है। ऐसा नहीं कि कबीर के समय नहीं थे। तब उन्होंने लिखा थोड़ी भक्ति बहुत अहंकारा, ऐसे शिरजां मिलै अपारा। यह कबीर की भक्ति के चेतना में मौजूद है। आज उसकी कीमत है, इसलिए गांधी ने चरखा लिया जो आज के समय के लिए बेश कीमती है। मेरा मानना है कि आखिकार दाभोलकर, पानसारे कुलवर्गी और गौरी लंकेश की हत्या भी तो किसी ने की होगी? क्या उसके सामने कबीर और गांधी का चरखा नहीं दिखाई दी। ध्यान रहना चाहिए कि मध्यकाल एक सामाजिक व्यवस्था का नाम नहीं है। दरअसल भक्ति साहित्य में जो कुछ भी जनतांत्रिक, उदारवादी, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय या साहिष्णुता और सहनशीलता के तत्व हैं उन्हें जानबूझकर कर हिन्दुस्तान से मिटा देने का या भुला देने का प्रयत्न हो रहा है। इसके विपरीत कर्मकाण्ड, अंधविश्वास और रूढ़ियाँ हैं। उन्हें समाज में लाया जा रहा है। यही कारण है कि, गांधी के बाद कबीर के चरखा से आमजन का विश्वास टूटता नजर आ रहा है। फिर भी गांधी कबीर के चरखा के जरिए एक ऐसी आर्थिक और रोजगार नीति प्रस्तावित करते हैं— जो मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते का सुन्दर और कोमल उदाहरण है। दुनिया में व्यक्ति का व्यक्ति से लगाव है या नहीं। इतना तो जरूर सत्य है कि मनुष्यता ईश्वर ने सबको दी है। उसका प्रत्यक्ष प्रभाव साफ दिखाई दे रहा है, गॉंव उजड़ रहे हैं, लोग विस्थापित होते जा रहे है? बेरोजगार की फौज बढ़ती जा रही हैं। पूंजीवादी व्यवस्था देश को विकास के नाम पर खोखला करता जा रहा है? आज याद करने की जरूरत है गांधी के कुटीर उद्योग, के महत्व को जो कबीर का चरखा गांधी का चरखा बनता है। जिसमें समतामूलक भारत का स्वप्न है। रामराज की कल्पना है। जाति, धर्म, अमीरों, आदि का जो भेदभाव है उसकी समाप्ति का स्वप्न है। सबके लिए श्रम करना अनिवार्य है, जो बिना श्रम का रोटी खाता है वह पाप की रोटी खाता है। क्योंकि श्रम—भेद के कारण ही जाति भेद है। श्रम भेद समाप्त होना चाहिए। एक प्रसंग भारत विभाजन का है। देश के बटवारे के लिए जिन्ना अड़े थे। गांधी जी राष्ट्रीयता की लेही से भारत को एक करना चाहते थे। जिन्ना धर्म की बारूद का उपयोग करके उसे दो टुकड़ों में करना चाहते थे। मेरा सोचना है कि जिन्ना ने यदि कबीर के चरखा की कविता पढ़ी होती तो शायद वे दूसरे जिन्ना होते। भारत का इतिहास कुछ और होता। जैसा कि आजकल अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में जिन्ना की मूर्ति को लेकर बहस हो रही है।

अध्यन का उद्देश्य

शोध लेख के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. भक्ति कवियों ने निजी मोक्ष को सामाजिक मोक्ष में बदल दिया है कैसे बदल दिया है उस पर विचार किया गया है।
2. कबीर और गांधी की विरासत यानी चरखा जीवन में झांकती भी है, व साथ ही साथ संवाद भी करती है। इससे अवगत कराना है।
3. चरखा का अर्थ समतामूलक भारत का स्वप्न। चरखा शब्द को उलटने पर जो अर्थ निकलता है वह है ''खारचा''! ''पेट पालने'' का सूत्र बताना है।
4. श्रम भेद मिटाने की कुंजी से अवगत कराना।

भक्ति कवियों ने निजी मोक्ष को सामाजिक मोक्ष में बदल दिया। कबीरा सोई पीर है। जो जाने पर पीर, या परहित सरिस धर्म नहीं भाई का संदेश था। गांधी जी ने जिस राम को लिया वह राम दशरथ के पुत्र नहीं है। न मूर्ति के राम हैं। उनका राम आत्म शक्ति एवं राष्ट्र सेवा का ही दूसरा रूप था। गरीब की सेवा ही गांधी का मोक्ष था। स्वच्छता ही उनका देवता था। राम नाम से मनुष्य में अनासक्ति और समता आती है। चरखा खादी ग्राम उद्योग था। गरीबों के रोजगार का मुख्य हथियार था। इसके पीछे भक्त कवियों का एक सुन्दर संसार का स्वप्न था जैसे—कबीर का अमरपुर, जायसी का सिघंलद्वीप, सूर का वृन्दावन, तुलसी का रामराज्य, रैदास का बेगमपुरा शहर को नाऊँ। यह संसार दुःख रहित है। इतना अनुशासित है कि वहॉं किसी थानेदार, किसी बादशाह की जरूरत नहीं है। ऐसा स्वप्न 19वीं सदी में मार्क्स ने देखा था। ऐसा स्वप्न 20वीं सदी में गांधी ने चरखा के जरिए रामराज्य को देखा था। जहॉ किसी भी तरह के भेदभाव नहीं है। रवीन्द्र नाथ का गीत एकला चलो रे गांधी के अभय मंत्र का दूसरा नाम है। इन गीतों के माध्यम से भयग्रस्त समाज में अभय का संचार है। यह विरासत कबीर के चरखे यानी भक्ति भाव से जुड़ती है और यहीं नहीं विरासत झांकती भी है। यहॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध ''मनुष्यता ही साहित्य का लक्ष्य है।'' इस देश को कैसे बचाया जाय। मेरा मानना है कि चरखा को (स्वदेशी रोजगार) को फिर से लागू करने की जरूरत है। यही उद्देश्य है। क्योंकि

सरलता और परिश्रम का मार्ग ही तुफान आने पर भी रूक सकता है, जब सीने में लक्ष्य हो।

उपकल्पना

शोध लेख के माध्यम से सबके लिए श्रम अनिवार्य है। जो बिना श्रम की रोटी खाता है, वह पाप की रोटी खाता है। क्योंकि श्रम भेद के कारण ही जाति भेद है। इसको मिटाने का सार्थक प्रयास है।

शोध प्रविधि

शोध लेख की पड़ताल विधि– मुख्य रूप से मौलिक है। सिर्फ संदर्भ जोड़ने के लिए–जर्नल्स पुस्तकों, समाचार पत्र आदि का सहारा लिया गया है। स्वयं का चिन्तन है। यही शोध प्रविधि है।

साहित्यावलोकन

संरक्षण की पहल

भारतीय जन जागरण की पृष्ठभूमि में संत कवियों और भक्तों की महती योगदान रही है। कबीर, तुलसी, नरसी मेहता जैसे संत–भक्त कवि अपने समय और समाज में उन्नायक और प्रेरक भी। इनका प्रभाव रवीन्द्रनाथ टैगोर पर तो है ही सबसे ज्यादा महात्मा गांधी पर पड़ा। परिणामतः भारतीय राष्ट्रीय जागरण काल में कबीर का चरखा गांधी का चरखा बनता है। तुलसीदास का रामराज गांधी का सुराज बनता है। कबीर के 100पदों का रवीन्द्रनाथ टैगोर ने **"One Handedred"** (''वन हैन्ड्रेड पोएम्स ऑफ कबीर'') शीर्षक से अनुवाद किया। कबीर के पदों से बंगाल के बाउल भक्त प्रभावित हुए। लालन फकीर (19वीं सदी के बाउल फकीर) ने कबीर की परम्परा को आगे बढ़ाया। (भक्त कवि सामन्तवाद, विरोधी थे पृ0/64 मैनेजर पाण्डेय बागर्थ फरवरी 2018)[1]

भक्ति काल के कवियों में धार्मिक चेतना सच्ची थी। वे उदारवादी होते थे। जबकि आज की धार्मिक भावना में छल, छदम् द्वेष की भरमार है। कबीर, सूर, तुलसी, नरसी मेहता और मीराबाई की धार्मिक चेतना से आज के तथाकथित संत आशाराम, रामरहिम, रामपाल कोसों दूर हैं। ये सब हमें बताते है कि बाबा गीरी इस देश में इतना बड़ा धंधा है, जहाँ बिना किसी निवेश के भक्तों की फसल बोई जा सकती है और उसे बार–बार काटकर मालामाल हुआ जा सकता है। जबकि भक्ति काव्य में व्यक्तिवाद का विरोध है। सच्चे सुख के लिए स्वार्थ और अहंकार को त्यागना होगा। जीवन में सुन्दर की खोज ही भक्त कवियों के मुख्य लक्ष्य थे। सभी भक्त कवि मूल्य प्रवण और नवोन्मेषी थे। वे पुनरूत्थानवादी न थे। उनका ईश्वर पोथी में कैद, छुआछूत से डरने वाला औरा कर्मकाण्ड में सीमित न था। उनकी भक्ति ने साम्प्रदायिक किलेबंदी तोड़ी। वह एक अध्यात्मिक क्रान्ति थी। जिसने उन्नसवीं सदी में आकर नवजागरण का रूप लिया वहीं से गांधी जी ने कबीर के चरखे को शायद देखा। दक्षिण भारत के आलवार और नायवार भक्तों से लेकर ज्ञानेश्वर, तुकाराम, कबीर, गुरूनानक, सूर तुलसी, मीरा, जायसी आदि सभी ने कर्मकाण्ड, धार्मिक पाखण्ड, और कट्टरवाद का विरोध किया।

करीब से जानें संस्कृति

कहना न होगा कि भक्त कवियों ने वैरागियों की तरह इस लोक को झूठा नहीं माना। कबीर गृहस्थ थे। जायसी के पदमावत का रत्नसेन स्त्री को जीतता है तो बलपूर्वक नहीं, बल्कि योगी बनकर प्रेम से अपनाता है। एक कवि पहली बार स्त्री में ईश्वर को देखता है और कहता है–विधना के मारग हैं तेते, सरग नखत तन रोवां जेते' (वागर्थ फरवरी 2018 पृ0/6, सम्पादकीय से)[2] अर्थात ईश्वर तक पहुंचने के उतने रास्ते है, जितने आसमान के नक्षत्र और शरीर के रोएं हैं।

दरअसल गांधी जी ने भक्ति में निर्बैर, निर्भयता, निःस्वार्थता, बाह्याचार, विरोध सादगी दूसरे से मिश्रण, घृणा की जगह प्रेम, तन्यमता जैसे जो सामान्य तत्व हैं उन चीजों से ज्यादा प्रभावित हुए। दूसरा कारण प्रभावित होने का यह है कि ईश्वर क्या है? यह बतलाने के लिए ईश्वर कभी नहीं आया। इसके पीछे गांधी के एक हाथ में कबीर का चरखा था तो दूसरे हाथ में तुलसीदास का रामचरित मानस।(महात्मा गांधी और भक्ति काव्य पृ0/92 गोपेश्वर सिंह वागर्थ 2018 पृ0)[3] था। जिसको मनुष्य ही कभी सत्य, कभी प्रेम, कभी करूणा, कभी ईमानदारी, कभी स्वच्छता, कभी प्रकति, कभी अपनी देव कल्पनाओं या रहस्यमय अनंदानुभूति में जानी। हजारों साल से ईश्वर को खोजता आया है– कबीर मानते थे जैसे–वह जुलाहा बनकर चरखा चला रहे हैं, वैसे ही ब्रह्म रूपी जुलहा दुनिया रूपी चरखे को चला रहा है। इसी प्रक्रिया में जो संगीत फूटती है वहीं अनहदनाद है।(वही पृ0/93)[4]

साथ से बनेगी बात

वैसे तुलसी ने सियाराम सब जग जानी कहा, कबीर कहते हैं–जाति न पूछौ साधु की यही नहीं दुखिया दास कबीर है जागे अरू रोवे, तो मीरा भी बोलती थीं–री म्हाँ बैठाया जागा, जगत सब सोवा। तुलसी ने धूत कहो, अवधूत कहो, रजपूत कहो, जोलहा कहो कोऊ जैसी पंक्तियां लिखी। रैदास बेगमपुरा की बात कही। इसके बरक्स दूसरी परम्परा विद्यापति से चलकर तुलसी और उनसे आगे जाती है, दोनों का समन्वय गांधी के रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम। ईश्वर अल्लाह तेरो नाम– में मिलती है।(भक्ति कवियों का साहित्य समझने के लिए अब इण्टर प्रेटर चाहिए पृ0/282, अरूण कुमार वागर्थ मार्च 2018)[5]

यानी एक दूसरे से जोड़ने वाले ऐसे सूत्र आन्दोलन का रूप दे रहे थे। यह प्रतिरोध और पुनःनिर्माण की आवाज थी। इस प्रक्रिया में अपनी शक्ति और शत्रु को पहचान कर पूरी सजगता के साथ सामूहिक प्रतिरोध की आवाज बनकर सामाजिक संघर्ष में उतरता है।(भक्त और ढोंगी में फर्क पृ0/86 रवि श्रीवास्तव वागर्थ मार्च 2018)[6]

सुधारने होगें हालत

जिसमें दिखावा, घृणा, और दमन से मुक्त मानवीय समाज बनाओ की शक्ति छुपी थी। गांधी जी के मनःस्थिति में ये सब बातें बस गयी थी। उस जमाने में सामाजिक प्रश्नों पर लगातार बहस होती थी। कबीर खुलकर तर्क करते थे। उदाहरणार्थ देखा जा सकता है धर्म और अध्यात्म में क्या फर्क है? धर्म पृथक है। अध्यात्मक पृथकता की चेतना है। वे जानते हैं कि बड़े बॉधो, बड़े कारखानों और बड़ी पूँजी के खेल से संचालित जो विकास हैं, वह थोड़े लोगों को सम्पन्न बनाती है।

अधिक लोगों को उजाड़ती है।(महात्मा गांधी की भक्तिकाव्य पृ0/93 गोपेश्वर वागर्थ मार्च 2018)[7]

अपना सकते हैं ये तरीके

कबीर ने हिन्दू और मुसलमान शब्दों का प्रयोग करते हुए कठमुल्लों को ललकारा था। यही कारण है कि कबीर का सत्य, तुलसी का विवेक मीरा का अनुभव यह सब धार्मिक पदावली के भीतर व्यक्ति की महत्ता का प्रतिपादन है। कबीर दरबारी संत नहीं थे। इसलिए जिस जन संस्कृति का निर्माण उन्होंने किया पुरोहितवादी रूढ़ियाँ, उनका स्रोत कभी नहीं रहीं। यही भावधारा अखिल भारतीय स्तर पर गांधी को बॉधे हुये हैं और यहीं से चरखा को धारण करते हैं। गुलाम भारत को स्वतंत्र कराते हैं,। सचमुच देश कबीर के चरखे से स्वतंत्र हुआ है। मनुष्य के बीच भेदभाव रखकर इस भवसागर से मुक्ति नहीं है। यही चरखे का मूल रहस्य है। यही गांधी और कबीर के कर्म एवं जीवन का भी निष्कर्म है। इस मनुष्य की भलाई के लिए हम अपने आप को निःशेष भाव देकर ही सार्थक हो सकते हैं। सारा देश आपका है। भेद और विरोध ऊपरी हैं। भीतर मनुष्य एक हैं–बरबस कबीर याद आते हैं। कबीर इस संसार को समझॉऊ कै बार। पूंछ जु पकड़ भेद का, उतरा चाहे पार" यही नहीं सही पता ठिकाना लेना है तो असम के शंकर देव, बंगाल के चैतन्यमहाप्रभु उड़ीसा के पंचसखा, महाराष्ट्र के बारकारी आन्दोलन और दक्षिण भक्ति काव्य के जरिये जिस अभेदक मानवीय संसार की रचना होती है उसे बार–बार समझने की जरूरत है। इतना तय है कि भारत में भक्ति साहित्य रचा गया काव्य के जरिये जिस अभेदक मानवीय संसार की रचना की, उसका साक्षात्कार जिसने भी किया वह कविता हो गया। गांधी हमारे समय में भक्ति कविता के चलते – फिरते चलचित्र हैं। वे 20वीं सदी में भक्तिकाव्य के आधुनिक भाष्य हैं। उनके संस्कार से निर्मित गांधी का जीवन और जीवन का संदेश एक सम्पूर्ण दृष्टि है, उस दृष्टि का प्रतीक कबीर का चरखा है, जो गांधी को चरखे तक लाती हैं जो चार वर्ण से उपर पॉचवाँ वर्ण समाज को माना और नये समाज का स्वप्न देखा। भक्ति काव्य से प्रभावित गांधी अपने सुराज में ऐसे समाज का सपना देखते हैं। याद आता है कि–इस देश में हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ब्राह्मण हैं, चांडाल हैं, धनी हैं, गरीब हैं–विरूद्ध संस्कारों और विरोधी स्वार्थों की विराट वाहिनी है।(वहीं पृ0/96)[8]

इन झरोखों से विरासत झांकती है

सचमुच गांधी स्वयं में पूरा भारत हैं। यही नहीं पूरे विश्व सहेज लेता है, अपने मानस में शाश्वत प्रेरणा की तरह। जिनका साथ महसूस करा देता है, दोस्त, गार्जियन, शिक्षक, भाई, बहन जैसा पवित्र रिश्ता। कहे–अनकहे, जाने अनजाने भी वह पा लेना चाहता है ऐसे चरखे का स्नेह जो उसकी जीत में ही नहीं हार में भी खड़ा हो सके उसके साथ। गांधी का चरखा हृदय के तारों में एक अनोखा कोमल राग भर देता है। हम एक बहुत जटिल समय में जी रहे हैं। ऑख खोलकर देखेंगे तो मन की सहजता के दर्शन भी हमें देखने को मिल जायेंगें। जैसा कि गांधी जी ने कबीर के चरखे में देखा था। यह शोध लेख मानवता के पक्ष में अलख जगाता, समाज की सार्थक अभिव्यक्ति है। इसी उम्मीद में कि दुनियावी तूफान में भी उनकी जीवन ज्योति थरथराती है, कॉंपती है, पर बुझती नहीं। लगातार जल रही है। गांधी जी ने चरखे को बनाया आर्थिक, स्वावलभ्वन का प्रतीक। चरखा वह यंत्र है जिसका चक्र घुमाते ही सब एक जैसे हो जाते हैं। काम ऐसा होना चाहिए जिसे अनपढ़ और पढ़े लिखे, भले और बुरे सब एक जैसे हो जाते हों। यही नहीं काम ऐसा होना चाहिए जिसे अनपढ़ और पढ़े लिखे, भले और बुरे बालक और बूढ़े, पुरूष, लड़के और लड़कियाँ कमजोर एवं ताकतवर चाहे वे किसी जाति और धर्म के हों कर सके। चरखा ही एक ऐसी वस्तु है जिसमें यह सबगुण विद्यमान है। चरखे में बड़ी ताकत है। अहिंसा की शक्ति बढ़ानी हो तो फिर से चरखे को अपनाना होगा।(सहारा 28 मार्च 2018 पृ0/16, नई दिल्ली वार्ता से गांधी ने चरखे को बनाया आर्थिक स्वालम्बन का प्रतीक)[9] और उसका पूरा अर्थ समझना होगा। तभी हम तिरंगे झण्डे का गीत गा सकेंगें। जब तिरंगा झण्डा बना था, तब उसका अर्थ यही था कि हिन्दुस्तान की सभी जातियां मिल जुलकर काम करें और चरखे के द्वारा अहिंसक शक्ति का संगठन करें।

आज भी चरखे में अपार शक्ति है। अगर हम सब भाई बहन दोबारा चरखे की ताकत को समझकर अपनाएँ तो बहुत से काम बन जायेगें। चरखे पर जोर देने के पीछे गांधी जी की यह सोच थी। इससे गरीब तपके के लोगों को काम दिया जा सकता है। चरखे में आज बदलाव जारी है। लेकिन अब वह इस्तेमाल के बजाय प्रदर्शन की वस्तु बन गया है। प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक डॉ0 रामजी सिंह कहते हैं कि चक्की चूल्हा, और चरखा हमारी संस्कृति के अंग है। गांधी जी ने चरखे को नया जीवन दिया तथा स्वतंत्रता और स्वालम्बन से जोड़ा। चरखा केवल चरखा नहीं था। समाज को बाँधने और रहन–सहन की विधि बताने वाला प्राथमिक यंत्र की तरह। चरखा और करघा अर्थात् आजीविका के लिए संघर्ष जुलाहे (कबीर) के संसार का सच। इन जुलाहों के कच्ची उम्र के बच्चे तक, गरीबी अभाव और जिम्मेदारी के एहसास को ढोते हुए जीवन संघर्ष में शामिल हो जाते हैं। चरखा केवल चरखा नहीं था वह सुदर्शन चक्र बन गया था। कबीर से चलकर गांधी तक आता है अतंतः देश को आजाद कराने में सहायक बना।

निष्कर्ष

अन्त में कबीर याद आते हैं। चादर बुन गयी है उसमें भावी पीढ़ी की डिजाइन डाली गयी है। जो पाठकों को एक सार्थक दिशा में जाने के संकेतों से भरी पड़ी है। जो सूक्ष्म संवेदनात्मक संकेतों से। अतीत के इस ताप को कोई अकेले नहीं महसूसकर सकता है। जीवन और मृत्यु के उत्सव की आन्तरिक बुनावट और उसके रसायन में कोई बुनियादी अन्तर नहीं होता है। जीवन और मृत्यु (कबीर और गांधी) के दो ध्रुवों पर अपनी अपील निश्चित है। यह शोधलेख सार्वभौमिक व सार्वकालिक है अर्थात्–

मर्द का पाँव करघा पर।
स्त्री का हाथ चरखा पर।।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भक्त कवि सामंतवाद, विरोधी थे–मैनेजर पाण्डेय बागर्थ फरवरी 2018 पृ0 64
2. वागर्थ फरवरी 2018, पृ0 6, सम्पादकीय से
3. महात्मा गांधी और भक्ति काव्य–आलेख गोपेश्वर सिंह वागर्थ 2018 पृ0 92
4. वहीं पृ0 93
5. भक्त कवियों का साहित्य समझने के लिए अब इंटर प्रेटर चाहिए–अरूण कुमार वागर्थ मार्च 2018, पृ0 282.
6. भक्त और ढोंगी में फर्क– रवि श्रीवास्तव सब वागर्थ मार्च 2018 पृ 86
7. महात्मा गांधी की भक्तिकाव्य–गोपेश्वर सिंह वागर्थ मार्च 2018 पृ0 93
8. वहीं पृ0 96
9. सहारा 28 मार्च 2018 नई दिल्ली वार्ता से गांधी ने चरखे को बनाया आर्थिक स्वालम्बन का प्रतीक, पृ0 16